लेख: किसानी समाचार

पालतू पशुओं द्वारा चिकित्सा: कई बीमारीयों को स्वास्थ्य लाभ करने का माध्यम

परिचय:

स्वास्थ्य समस्याओं और बीमारी, दोनों शारीरिक और मानसिक विकलांगता से प्रभावित प्रमुख कारकों में से एक हैं जो मानव जीवन की गणना के वर्षों को समायोजित करती हैं। वर्तमान विश्वव्यापी विश्व में, तनाव और गैर संचारी रोग मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। पारंपरिक दृष्टिकोण राहत प्रदान करते हैं लेकिन वे एक सामाजिक पालतू पशु के रूप में मनुष्य की भूमिका, प्रकृति और जानवरों के साथ उनकी सामाजिक बातचीत को संबोधित करने में विफल होते हैं। लेकिन इन कारकों का स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है, विशेष रूप से मानव के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार। विभिन्न अध्ययनों ने पशुओं और पौधों के साथ मानव के पारस्परिक संबंधों के लाभों का दस्तावेजीकरण किया है, जिससे उनकी स्वास्थ्य स्थितियों में सुधार हुआ है। एक ऐसी बातचीत जो आशाजनक परिणाम दिखाती है वह है पालतू कुत्तों की चिकित्सा या एनिमल असिस्टेड थेरेपी (AAT)। पालतू पशु चिकित्सा या पशु सहायता चिकित्सा को "रोगियों के साथ शारीरिक, सामाजिक, संज्ञानात्मक और भावनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित जानवरों और संचालकों के उपयोग" के रूप में परिभाषित किया गया है। यहां महत्वपूर्ण ध्यान "प्रशिक्षित" शब्द का उपयोग है, जिसका अर्थ है कि चिकित्सा में उपयोग किए जाने वाले जानवरों को विभिन्न रोगियों के साथ व्यवहार करने के तरीके पर सही तरीके से सिखाया जाता है। प्रशिक्षक की भी महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि यह पशु और रोगी के बीच एक निर्देशित बातचीत है। पालतू कुत्तों को मनुष्यों को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करने की शक्ति का दस्तावेजीकरण किया गया है। कुछ अध्ययनों से इस चिकित्सा की उत्पत्ति का हवाला ग्रीस से है, जबकि कुछ अन्य अध्ययनों के अनुसार यह बेल्जियम से उत्पन्न हुआ है। नौवीं शताब्दी के ए.डी. के ऐतिहासिक अध्ययनों से संकेत मिलता है कि घेल, बेल्जियम में लोगों ने देखा कि खेत जानवरों की देखभाल करने से विकलांग लोगों की स्थिति में सुधार करने में मदद मिली। प्राचीन ग्रीक लोगों ने गंभीर रूप से बीमार रोगियों के स्वास्थ्य में सुधार के लिए घोड़ों का उपयोग किया। 1940 के दशक में अमेरिकन रेड क्रॉस ने चोट से पीड़ित दिग्गजों के स्वास्थ्य में सुधार के लिए खेत जानवरों का भी इस्तेमाल किया।

रोग का इलाज करने वाले पालतू जानवरों का पहला उपयोग हालांकि मध्ययुगीन काल में बेल्जियम में हुआ था। 1800 के दशक में, फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने देखा कि छोटे पालतू जानवरों ने मनोरोग रोगियों में तनाव के स्तर को कम कर दिया है। इसने जानवरों के उपयोग पर शोध अध्ययनों को आधार बनाया मानव रोगों का उपचार। बाद में डॉ। सिगमंड फ्रायड सहित कई मानव फिजियोलॉजिस्ट और मनोवैज्ञानिक ने मानव उपचार में पालतू जानवरों के उपयोग के विचार के साथ प्रयोग किया।

वर्तमान में दुनिया भर में कुत्तों और बिल्लियों को मुख्य रूप से पालतू चिकित्सा में उपयोग किया जाता है। लेकिन कुछ अन्य जानवरों जैसे मछली, सूअर, घोड़े और पक्षी भी, पालतू चिकित्सा उपचार में प्रयोगात्मक रूप से उपयोग किए जाते हैं। चुने गए जानवर का प्रकार उपचार पर आधारित होगा। विषय में गहराई से गोता लगाने से पहले, पालतू चिकित्सा के बीच अंतर करने की आवश्यकता होती है जिसे पशु सहायक गतिविधियों (एएए) से पशु सहायता चिकित्सा (एएटी) भी कहा जाता है। यह याद रखना चाहिए कि विशिष्ट उपचार लक्ष्यों के साथ संरचित सत्रों के साथ एएटी या पालतू चिकित्सा अत्यधिक औपचारिक है, जबकि एएए एक आकस्मिक बैठक प्रकार है जिसमें पशु और उसके देखभाल करने वाला आराम या मनोरंजन के लिए एक या अधिक लोगों के साथ बातचीत करते हैं।

Scanned by CamScanner

पालतू पशु चिकित्सा इस आधार पर निर्मित होती है कि मानव और पालतू पशुओं के मध्य एक गहरा बंधन मौजूद है और इस तरह की बातचीत मानव को उनकी कई शारीरिक और मानसिक समस्याओं से राहत दिलाने में मदद करती है। इसका लाभ शारीरिक या भावनात्मक या मनुष्य दोनों को हो सकता है।

पालतू कुत्तों की चिकित्सा के शारीरिक लाभ

पालतू कुत्तों की रक्तचाप को कम करने में मदद करती है। यह व्यक्ति को हद्यवाहिनी स्वास्थ्य में सुधार करता है और उन्हें अधिक शारीरिक तनाव सहन करने में सक्षम बनाता है। पालतू जानवरों के साथ बातचीत ऑक्सीटोसिन जैसे एंडोर्फिन की रिहाई में मदद करता है जो एक शांत प्रभाव पैदा करते हैं। यह विशेष रूप से कैंसर के उपचार में शारीरिक दर्द को कम करने में मदद करता है और रोगियों में थकान को भी कम करता है। पेटिंग के जानवरों के परिणाम स्वत: विश्राम की प्रतिक्रिया में आते हैं, जिससे दवा की मात्रा कम हो सकती है। पालतू पशु चिकित्सा के कई अन्य भौतिक लाभों को मान्य किया गया है और कई अभी भी जांच के दायरे में हैं।

पालतू कुत्तों की चिकित्सा के मानसिक लाभ

पालतू कुत्ते मरीजों को भावनात्मक सहायता प्रदान करते हैं। वे मानसिक रोगियों में व्याकुलतापूर्ण व्यवहार के विक्षेप और व्यवधान में सहायता के रूप में कार्य कर सकते हैं। चिकित्सा रोगियों को एक सकारात्मक पहचान प्रदान करती है और उन्हें अकेलेपन से निपटने में मदद करती है। पालतू कुत्ते आमतौर पर मानसिक रूप से बीमार रोगियों में सामाजिक संपर्क के स्तर को बढ़ाते हैं। चिकित्सा ऊब को कम करने, चिंता को कम करने और आत्माओं को जगाने में मदद करती है। अध्ययन ने अवसाद का मुकाबला करने में पालतू कुत्तों की भूमिका का दस्तावेजीकरण किया है। वे संज्ञानात्मक विकारों के इलाज में भी सहायता करते हैं। पालतू जानवर, विशेषकर कुत्ते मनोभ्रंश से प्रभावित रोगियों की मदद करते हैं, उनके समाजीकरण कौशल में सुधार करने के लिए। पेट असिस्टेड थेरेपी भी एक औपचारिक और तययुदा तरीका है जिससे मनोरोग रोगियों के संचार कौशल में सुधार करती है और तेजी से रिकवरी के लिए उन्हें प्रेरणा प्रदान करती है। इस चिकित्सा द्वारा सामान्य दवा मानसिक रोगी पर्यावरण के साथ अपनी सहभागिता को बेहतर बना सकते हैं। पालतू कुत्तों की चिकित्सा बच्चों को बेहतर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती है और उन्हें अपने साहित्यिक कौशल को सुधारने में भी मदद करती है। पालतू कुत्ते रखने वाले बच्चों में पालतू जानवरों के न होने से बेहतर आत्मविश्वास पाया गया। बच्चों में, पालतू कुत्ते आत्म चेतना और अन्य स्वार्थी व्यवहार को कम करने में मदद करते हैं। पालतू कुत्ते बच्चों के सीखने और संज्ञानात्मक कौशल को बढ़ा सकते हैं।

अन्य लाभ

एक पालतू कुत्ते का मालिक होना और उन्हें व्यायाम के लिए ले जाना एक व्यक्ति को अपने मोटर कौशल में सुधार करने में मदद करेगा। यह व्यक्ति के संयुक्त आंदोलन में सुधार करता है। ऐसे व्यक्तियों में स्वास्थ्य सुधार का समय भी बढ़ जाता है। यह किसी व्यक्ति को खुश करने में भी मदद करता है और व्यक्ति में सहानुभूति और आहार पोषण कौशल बनाता है।

किसे पालतू चिकित्सा से गुजरना चाहिए

मनोभ्रंश, अल्जाइमर रोग, सिज़ोफ्रेनिया आदि जैसी मानसिक स्थितियों वाले लोगों में, पारंपरिक उपचार के साथ-साथ पालतू चिकित्सा भी फायदेमंद होगी। जिन व्यक्तियों को **स्ट्रोक या पार्किंसंस** जैसे रोग के लिए **कीमोथेरेपी** या भौतिक चिकित्सा से गुजरना पड़ता है, वे पालतू चिकित्सा के साथ-साथ यदि उपचार संचालित होते हैं, तो उपचार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और उपचार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण। पुरानी बीमारी और हृदय की समस्याओं से पीड़ित मनुष्यों में पालतू कुत्तों की

Scanned by CamScanner

चिकित्सा ने आशाजनक परिणाम दिए हैं। शारीरिक या दंत प्रक्रिया वाले बाल रोगियों में यह उन्हें शांत और प्रोत्साहित करने में मदद करता है। यह विशेष रूप से जराचिकित्सा रोगियों में पुरानी स्थितियों के उपचार में आशाजनक परिणाम भी देता है।

पालतू पशु चिकित्सा का प्रशासन

डॉक्टर यह तय करेगा कि पालतू कुत्ता चिकित्सा रोगी के लिए फायदेमंद है या नहीं। उपचार के लिए एक प्रशिक्षित प्रशिक्षक और एक प्रशिक्षित पालतू कुत्ते की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षत डॉक्टर के निर्देश के तहत काम करता है। आमतौर पर कुत्तों या बिल्लियों को चुना जाता है। एक प्रतिष्ठित संस्थान से संबधित पालनू कुत्ता चिकित्सा एवं प्रशिक्षण के लिए प्रमाण पत्र होना आदर्श है।

जोखिम

यदि पालूत कुत्ता का स्वभाव अच्छा नहीं है तो सुरक्षा जोखिम हो सकता है। यदि पशु को प्रतिरक्षित नहीं किया जाता है और **ज़ूनोटिक रोग** से प्रभावित होता है, तो विशेष रूप से **इम्यूनो कॉम्प्रोमाइज्ड** व्यक्ति में चिकित्सा जैसे रोगियों का संक्रमण होने की संभावना होती है। लेकिन पालतू कुत्ते के पूर्व टीकाकरण और जांच से स्थितियों को नियंत्रित किया जा सकता है। पालतू कुत्ता चिकित्सा उन रोगियों से बचना चाहिए जिन्हें ऐसे पालतू कुत्तों से एलर्जी है। जबकि दुर्लभ, चोट लग सकती है अगर जानवर का चयन उचित नहीं है।

पालतू कुत्तों की चिकित्सा और नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय

नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश में पशु चिकित्सा और संबद्ध विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने वाला अग्रणी संस्थान है। विश्वविद्यालय में स्थित पालतू शिक्षा और परामर्श केंद्र, पालतू पशुओं जैसे कुत्ते /बिल्लीयों के मालिकों को पोषण, टीकाकरण, निर्जलीकरण और जानवरों के स्वास्थ्य देखभाल और प्रबंधन से संबंधित अन्य पहलुओं की जानकारी प्रदान कर रहा है। इच्छुक व्यक्ति डीन, कॉलेज ऑफ वेटरनरी साइंस एंड एनिमल हसबैंड्री, जबलपुर / महू / रीवा एवं निर्देशक पशु चिकित्सालय, जबलपुर से संपर्क कर सकते हैं या विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.ndvsu.org पर खोज सकते हैं।

लेखक: आचार्य डॉ. प्रयाग दत्त जुयाल,
कुलपति,
नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा वि.वि., जबलपुर (म.प्र.)

9/4/2019
(डॉ. अनिल कुमार गौर)
सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी
ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर (म.प्र.)

Scanned by CamScanner